

16 खेलों में करियर : क्यों नहीं!

साईसुधा सुगवन्नम

"महत्वपूर्ण यह नहीं है कि आप कितनी बार गिरते हैं; महत्वपूर्ण तो यह है कि गिरकर भी आप कितनी बार उठ खड़े होते हैं।" – विंस लोम्बार्डी, प्रख्यात अमेरिकन फुटबॉल कोच।

भारत में खेलों के शौकीन बार–बार प्रश्न पूछते हैं –

- क्रिकेट वर्ल्ड कप दोबारा जीतने में हमें 28 साल क्यों लग गए?
- कोई भारतीय सबसे पहला व्यक्तिगत ओलिम्पिक स्वर्ण पदक जीते, इसमें 108 साल क्यों लगे?
- एकल ग्रैण्ड स्लैम खिताब जीतना इतना मुश्किल क्यों है?
- आठ ओलिम्पिक स्वर्ण पदक जीतने के अपने स्वर्णिम इतिहास के बावजूद भारतीय पुरुष हॉकी टीम 2008 के ओलिम्पिक में खेलने की योग्यता हासिल कर पाने (क्वालिफाई कर पाने) से भी कैसे चूक गई?

भारत दुनिया में सबसे अधिक जनसंख्या वाला दूसरा देश है। इसलिए यह मानना तो उचित ही होगा कि भारत में अनगढ़ प्रतिभा की कोई कमी नहीं है।

तो फिर समस्या क्या है?

कारण बहुतेरे और अक्सर एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं, जैसे –

- खेलकूद की बुनियादी सुविधाओं की कमी।
- संचालक संस्थाओं की उदासीनता।
- पारम्परिक रूप से, खेलों में आजीविका को लेकर एक तरह का अविश्वास।
- शीर्ष तक पहुँचने से पहले ही प्रतिभाओं द्वारा खेल का मैदान छोड़ दिए जाने पर ध्यान न दिया जाना।

देखा जाए तो ये सारी बातें निराधार भी नहीं हैं – दशकों से हो रहे धीमी गति के विकास को झेल रहे इस देश में 'पक्की' नौकरी का आश्वासन आज भी बड़ा आकर्षण रखता है।

लेकिन, समय ने करवट बदली है, और एक ज्यादा जवान, अधिक ऊर्जावान भारत इन सब सवालों के जवाब चाहता है।

बंगलौर स्थित एक खेलक्षेत्री गैर–सरकारी संगठन 'गो स्पोर्टस् फाउण्डेशन' की निधि गुप्ता और अदिति किणी द्वारा किए गए एक अध्ययन से यह बात सामने आई कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की साधारण सफलता का एक प्रमुख कारक यह है कि खेलों को अपना पेशा बनाने आए उत्तम दर्जे के योग्य खिलाड़ी चोटी पर पहुँचने से पहले ही मैदान छोड़ देते हैं।

''भारत में खेल–प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं; समस्या केवल यही है कि अगर एक खेल–विशेष में एक हजार खिलाड़ी हैं तो उनमें से केवल 100 के पास ही आवश्यक प्रतिभा होगी, और उन सौ में से भी केवल एक ही खिलाड़ी ऐसा होगा जो प्रचलित प्रतिमानों को तोड़कर आगे निकल जाएगा और सफल होगा – बाकी बचे 99 दौड़ से बाहर हो जाएँगे'' – यह कहना है 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के खेल पत्रकार अभिजीत कुलकर्णी का।



यह लेख खेल को 'बीच में ही छोड़ देने' की इस परिघटना की पड़ताल करता है। खिलाड़ियों द्वारा असमय प्रस्थान किए जाने के कुछ कारणों को इसमें रेखांकित किया गया है। इस अध्ययन की पूरी विषयवस्तु गो स्पोर्टस् फाउण्डेशन (जी.एस.एफ) के पास उपलब्ध है।

खिलाड़ियों द्वारा समय से पहले खेल छोड़ जाने के मुख्य कारण

47 लोगों की एक सैम्पल आबादी का सर्वेक्षण किया गया (जिनमें 14 खेल पत्रकार और 3 वर्तमान कोच समेत

33 खिलाड़ी थे)। इस सर्वेक्षण से खेल–परित्याग के निम्नलिखित प्रमुख कारण उभरकर आए (कोष्टक में दिए गए आँकड़े सैम्पल आबादी का वह प्रतिशत है जिसने उसे कारण नम्बर 1 करार दिया) –

- करियर की अव्यवहार्यता (34.04)
- व्यवस्थागत कारक (27.66)
- शारीरिक कारक (12.77)
- प्रदर्शन सम्बन्धी कारक (10.64)
- आर्थिक कारक (8.51)
- बाहरी कारक (6.38)

करियर की अव्यवहार्यता : देखने में आया कि भारत में खिलाड़ी अक्सर यह मानते हैं कि खेलों में सक्रिय रहने के दौरान उनके सम्बद्ध खेल के लिए कोई ऐसा व्यवस्थित, सुगठित करियर–पथ नहीं होता जिस पर चलते हुए उन्हें अपने खेल–काल के दौरान और उससे निवृत्त होने के बाद भी आर्थिक सुरक्षा मिल सके। इसमें आगे की उच्च शिक्षा हासिल करने या कोई अलग आजीविका अपनाने का फैसला भी शामिल है – इसलिए, कि खेल को एक करियर के तौर पर अपनाने में काफी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है, उसमें निश्चितता नहीं है। कर्नाटक की अण्डर–16 क्रिकेट टीम के भूतपूर्व कप्तान नन्दन कामथ की स्वीकारोक्ति पर जरा गौर फर्माएँ –''उस समय, कुछ गिने–चुने लोग ही क्रिकेट में अपना एक ठीक–ठाक करियर बना पाते थे। चयन–प्रक्रिया न तो पारदर्शी थी और हमेशा योग्यता–आधारित भी नहीं होती थी। इसलिए क्रिकेट में करियर बनाने की चाह जोखिम भरी बात थी। तो, मौका मिलते ही मैंने वकालत की पेशेवर पढ़ाई करने का विकल्प चुना। मेरा खयाल था कि इससे मुझे अपने भविष्य पर अधिक नियन्त्रण का मौका मिलेगा।''



व्यवस्थागत कारक : मालूम हुआ कि इनमें सरकारी समर्थन का न मिलना, बुनियादी सुविधाओं तक सीमित पहुँच, विशेषज्ञ प्रशिक्षक और चिकित्सा सेवाओं का आसानी से उपलब्ध न होना शामिल हैं। इसके अलावा कुछ लुके–छिपे जमीनी कारक भी उभरकर आए, जैसे खेल के वातावरण में आपस की टकराहटें और झगड़े, तथा खिलाड़ियों के पास प्रतिभा–प्रदर्शन और अपने समकक्षों के साथ प्रतिस्पर्धा के लिए सही अवसर न मिल पाना। एन.डी.टी.वी. की पत्रकार अनुसुइया माथुर मानती हैं, ''भारत में प्रतिभा, प्रतिबद्धता और उत्साह की कोई कमी नहीं है। कमी है तो व्यवस्था की, जो उनकी मदद को नहीं आती।''

हिन्दुस्तान टाइम्स के पत्रकार बी. विजय मूर्ति का कहना है, ''हर राज्य में खेल संघ हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश का संचालन स्वयं खिलाड़ियों द्वारा नहीं किया जा रहा है। इनका रवैया पेशेवर नहीं है और क्षेत्रीय राजनीति का भी इन पर बहुत प्रभाव रहता है।''

शारीरिक कारक : इसमें 'खेल बीच में छोड़ने' से पहले के दौर में लगी शारीरिक चोटें शामिल हैं, और खेल के मैदान में खिलाड़ियों की शारीरिक सीमाओं का मसला भी शामिल है जिनकी वजह से उनके लिए अगले स्तर तक पहुँचना सम्भव नहीं हो पाता। ''प्रशिक्षण शिविरों के दौरान कोई भी भारतीय खिलाड़ी अपना शत प्रतिशत नहीं देता, क्योंकि उन्हें हमेशा इस बात का डर रहता है कि यदि वे चोटिल हो गए तो फिर कभी खेल नहीं पाएँगे। ऐसा इसलिए, क्योंकि इस बात की कोई गारण्टी नहीं होती कि उन्हें उपयुक्त डॉक्टरी सहायता मिल जाएगी।" यह कहना है राजीव मिश्र का, जिनके शानदार स्वर्णिम गोल ने भारत को जूनियर हॉकी का सन् 1997 का विश्व कप दिलाया था। उन्हें चोट लगने की वजह से और सही डॉक्टरी इलाज नहीं मिलने की वजह से खेल छोड़ना पड़ा था।

प्रदर्शन सम्बन्धी कारक : देखने में आया कि खिलाड़ी के प्रदर्शन में सफलता या सुधार की कमी भी एक कारक है। नतीजतन, उसके जोश और हौसले में गिरावट आ जाती है और धीरे–धीरे उसकी सारी ऊर्जा खत्म हो जाती है। भारत के पूर्व क्रिकेटर एल. शिवरामकृष्णन कहते हैं, ''खिलाड़ी जब 'अण्डर 16' या 'अण्डर 19' के लिए नहीं चुने जाते तो बड़े निराश हो जाते हैं, और फिर वे पढ़ाई पर ध्यान देने लगते हैं। आत्म–विश्वास की

यह कमी खेलों की दुनिया को छोड़ने का कारण बनती है।''

आर्थिक कारक : खिलाड़ी का अपने खेल में आगे न जा पाने का सबसे प्रमुख कारण पैसे की कमी पाया गया, वह चाहे व्यक्तिगत स्तर पर पैसे के अभाव के चलते हो या फिर कोई प्रायोजक न मिल पाने के चलते। खेल जीवन में एक खास बिन्दु पर पहुँचने के बाद खिलाड़ियों को अपने उपकरणों, प्रशिक्षण और अन्तर्राष्ट्रीय टूर्नामैण्टों में भाग लेने के लिए यात्रा इत्यादि पर काफी पैसा खर्च करना पड़ता है। ऐसे में साधारण पृष्ठभूमि से आए लोगों के लिए खेल के मैदान में टिके रहना खास तौर पर और भी कठिन हो जाता है।

बाहरी कारक : इनमें मुख्यतौर से सामाजिक, घरेलू और हमउम्रों के अलग–अलग प्रकार के दबाव शामिल पाए गए। माता–पिता द्वारा अपने बच्चों के लिए अधिक सुरक्षित करियर चुनने की मानसिकता भी जिम्मेदार पाई गई। और यह भी, कि एकबारगी अपने 'अन्तरिम' लक्ष्य तक पहुँच जाने के बाद (मसलन, खेल के आधार पर किसी नामवर कॉलेज में दाखिला या कोई सरकारी नौकरी मिल जाना) खिलाड़ी खेल बीच में छोड़ने का निर्णय भी ले सकते हैं।



खिलाड़ियों द्वारा खेल छोड़े जाने की उम्र

सर्वेक्षण से यह तथ्य उभरकर आया कि तैराकी, क्रिकेट और टेनिस में खिलाड़ियों द्वारा खेल छोड़ देने की औसत उम्र 21 साल 3 महीने है। रोचक बात यह भी थी कि दो आयु–समूहों में यह प्रवृत्ति सबसे ज्यादा पाई गई : 21–22 और 18–19 बरस की उम्र में। यह संयोग की बात नहीं है कि ये आयु–समूह उम्र के उस विशेष पड़ाव से नाता रखते हैं जब हम अपने भविष्य के लिए एक पारम्परिक पेशा अपनाने के बारे सोचना शुरू करते हैं, यानी ताजा–ताजा स्नातक बनने के बाद 21–22 साल की उम्र; और जब हम बारहवीं कक्षा की महत्वपूर्ण परीक्षा का सामना कर रहे होते हैं, यानी 18–19 साल की उम्र। ये आँकड़े एक बार फिर उसी प्रवृत्ति की ओर इशारा करते हैं जिसके तहत 'परम्परागत' पेशे और खेलों के पेशे में से किसी एक को चुनने का विकल्प हो, तो अमूमन पहले वाला विकल्प ही चुना जाता है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि अधिकांश भारतीय खिलाड़ी खेलों में अपने लिए कारगर करियर की सम्भावना नहीं देखते।

उनसे पूछा गया कि ऐसा क्या किया जाना चाहिए था जिसके चलते उनका जुड़ाव अपने खेल से लगातार बना रह पाता? अधिकांश खिलाड़ियों का जवाब था कि अगर पैसा आसानी से उपलब्ध होता (खासकर विदेश यात्रा इत्यादि के लिए, क्योंकि देश में ऐसे टूर्नामैण्टों की कमी है जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विदेशी खिलाड़ी भाग लेते हों) या फिर उनके अपने खेल में कमाई की सम्भावनाएँ अच्छी होतीं तो वे खुद के लिए एक खिलाड़ी का पेशा चुनने के बारे में सोच सकते थे। पत्रकारों का भी यही कहना था कि सरकार द्वारा आवंटित धन खिलाड़ियों के

लिए आसानी से मुहैया होना चाहिए। एक ऐसी दुरुस्त व्यवस्था होनी चाहिए जिससे सुनिश्चित हो कि यह पैसा सही लोगों तक पहुँचे। इसके अलावा उनके विचार से देश में प्रत्येक खेल–क्षेत्र के विकास के लिए एक बेहतर व्यवस्था होनी चाहिए और भारतीय खिलाड़ियों का बेहतर प्रबन्धन और देखभाल होने चाहिए।

धन आवंटन को लेकर विशिष्ट हस्तक्षेप से समस्या पर कुछ हद तक तो काबू पाया जा सकता है लेकिन इससे किसी व्यापक स्तर के प्रभाव की उम्मीद रखना बेमानी होगा। वह इसलिए, कि खिलाड़ियों द्वारा खेल छोड़ देने की वजहें एक–दूसरे से स्वतन्त्र नहीं हैं, बल्कि कुछ मामलों में तो एक वजह दूसरी वजह का कारण बनती है, वे एक–दूसरे में से ही निकलती हैं।

ऐसी स्थिति में बेहतरी लाने के लिए किए गए हस्तक्षेप के कदम भी इतने आसान और सीधे तो नहीं होंगे। बल्कि तमाम साझेदारों को अपने–अपने स्तर पर कई तरह के हस्तक्षेप करने होंगे। इन साझेदारों में प्रमुख हैं खिलाड़ी और उनका एकदम निकटतम सहयोगी ढाँचा (परिवार, शैक्षिक संस्थान), सरकार की खेल–प्रशासक संस्थाएँ, मीडिया, खेलों में निवेश की सम्भावनाएँ देखने वाला कॉरपोरेट जगत और खेलों का रस लेने और उन्हें प्रोत्साहन देने वाला एक वृहत्तर समाज। बड़े स्तर की खेल प्रतियोगिताओं में मिली हालिया सफलताओं (2011 में मिली क्रिकेट विश्वकप विजय, ओलिम्पिक और कॉमनवेल्थ खेलों के ताजा संस्करणों में मिले अब तक के सर्वश्रेष्ठ परिणामों) को देखते हुए तो यही लगता है कि उपरोक्त में से कुछ कदम उठाए गए हैं और उनके अच्छे परिणाम भी मिलने लगे हैं। भारतीय खेलों का प्रशंसक तो इसी उम्मीद में बैठा है कि निरन्तर और व्यापक स्तर पर किए गए प्रयासों से कुछ और कच्चे हीरे भी चमक उठेंगे।

साईसुधा *ने बी.बी.सी., दिल्ली के साथ चार वर्ष से भी अधिक समय पत्रकारिता की है। बी.बी.सी. के अपने इस कार्यकाल के दौरान उनका अधिकांश काम खेलों और मानवीय सरोकारों पर केन्द्रित प्रसंगों पर रहा। अपने इस कार्यकाल के दौरान साईसुधा को कई खेल–प्रतियोगिताओं की रिपोर्टिंग करने का मौका मिला जैसे कि 2010 के कॉमनवेल्थ खेल, आई.पी.एल. और सन् 2011 का क्रिकेट विश्वकप और हॉकी विश्वकप। जून 2011 से वे गो स्पोर्टस् फाउण्डेशन से जुड़ी हुई हैं। साईसुधा के पास अन्ना विश्वविद्यालय, चैन्नई की मीडिया विज्ञान की स्नातकोत्तर उपाधि है। साईसुधा का ई–मेल है saisudha.sugavanam@gosports.in*

गो स्पोर्टस् फाउण्डेशन *एक अलाभकारी संस्था है जो भारत के कुछ सर्वश्रेष्ठ एथलीटों के साथ काम करती है। फाउण्डेशन के जरिए इन एथलीटों को तरह–तरह की वित्तीय और अन्य प्रकार की सहायता दी जाती है। जी.एस.एफ. से मिले इस लगातार सहयोग के चलते इन एथलीटों ने बड़ी भारी सफलताएँ अर्जित की हैं और देश को गौरवान्वित किया है। फाउण्डेशन केवल दान और चन्दे के बूते चलती है और इच्छुक व्यक्तियों तथा कम्पनियों से मिलने वाले किसी भी प्रकार के योगदान का यह स्वागत करती है।*

